



पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर-263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षक: डा. ए.के. मिश्रा, कुलपति

मुख्य सम्पादक: डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा

सम्पादक: ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण) एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक (सस्य)

कुलपति संदेश



उत्तराखण्ड 09 नवम्बर, 2000 को बना देश का 25वां राज्य है जहां तीन चौथाई से अधिक जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। राज्य में भौगोलिक क्षेत्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा पहाड़ी है जहां वर्षा आधारित खेती, छोटे व बिखरी हुई जोत, सीमान्त और छोटी जोत का भारी प्रतिशत, बुनियादी विपणन ढांचे का अभाव, वन्य जीवों से फसलों को क्षति, मौसम में बदलाव आदि कारणों से अधिकांश फसलों की उत्पादकता अत्यन्त कम है। परिणाम स्वरूप यहां का नवयुवक अपने भरण-पोषण के लिए मैदानों की तरफ पलायन कर गया है। स्थिति यह है कि आज अनेकों गांव वीरान हो चुके हैं तथा खेती योग्य अधिकांश भूमि बंजर हो चुकी है। पर्वतीय क्षेत्रों से पलायन को रोकने के लिए कृषि एवं कृषि से जुड़े क्षेत्रों में विशेष कार्य करने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न प्रसार गतिविधियों एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से राज्य के सुदूरवर्ती अंचलों तक कृषकों, महिला कृषकों एवं युवकों को खेती-बाड़ी की आधुनिक तकनीकी एवं समुचित जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है, जिसे व्यवहार में लाकर वे आजीविका एवं रोजगार के

क्षेत्र में आशातीत वृद्धि कर सकते हैं। उत्तराखण्ड का पहाड़ी क्षेत्र जैव विविधता में समृद्ध होने के साथ-साथ वहां की जलवायु बेमौसमी सब्जियों, बागवानी फसलों, संगन्ध व औषधीय फसलों, फूलों की खेती, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन आदि के लिये अत्यन्त अनुकूल है। यहां के कृषकों विशेष रूप से ग्रामीण युवाओं को इन क्षेत्रों में तकनीकी जानकारी व प्रशिक्षण देने के साथ-साथ उनका कौशल विकास कर उन्हें खेती के प्रति आकर्षित किया जाना होगा, जिसे हमारे विश्वविद्यालय व कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिक बखूबी कर सकते हैं।

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा त्रैमासिक पत्रिका "पन्त प्रसार सन्देश" का प्रकाशन अत्यन्त प्रशंसनीय एवं स्वागत योग्य कदम है। इस पत्रिका के अप्रैल-जून, 2018 (अंक 13:2) के माध्यम से प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों की प्रसार गतिविधियों को आप तक पहुंचाकर हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका प्रसार गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने एवं सुदूर क्षेत्रों तक विस्तारित करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाएँ।

(ए.के. मिश्रा)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा टमाटर, सब्जी मटर, प्याज, मसूर, गेहूँ, सरसों, बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग में नवीनतम तकनीकों का प्रदर्शन 333 कृषक प्रक्षेत्रों पर 44.50 है। क्षेत्रफल में आयोजित किया गया। सब्जी मटर में ग्रीन बुड, टमाटर में इन्डम 13407, अभिरंग, रक्षिता गोल्ड, प्याज में एग्रीफाउण्ड लाइट रेड, मसूर में पन्त मसूर 8, गेहूँ में एच.डी. 3086, डी.पी.डब्लू. 621-50, यू.पी. 2748, सरसों में पन्त पीली सरसों 1 एवं बैकयार्ड पोल्ट्री फार्मिंग में कैरी देवेन्द्रा प्रजातियों का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में उत्कृष्ट उत्पादकता पायी गयी। अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के परिणामों के प्रचार प्रसार हेतु दो प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन कर 52 किसानों को तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा तीन प्रक्षेत्र परीक्षण आयोजित कर 15 किसानों को लाभान्वित किया गया। केन्द्र द्वारा 14 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 897 किसानों को लाभान्वित किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन सब्जी उत्पादन, फसल उत्पादन, पादप सुरक्षा, पोषण प्रबन्धन, मृदा परीक्षण, कुक्कुट पालन, पशुपालन, बकरी पालन, गृह

वाटिका इत्यादि विषयों पर किया गया।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 64 डायग्नोस्टिक विजिट कर 822 किसानों की कृषि, पशुपालन, कुक्कुट पालन, बकरी पालन से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान किया गया। इसके अतिरिक्त 167 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 2002 किसानों को कृषि एवं इससे सम्बन्धित विषयों पर आ रही समस्याओं के निराकरण हेतु तकनीकी जानकारी उपलब्ध करायी गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों ने 03 गोष्ठियों में भाग लेकर 661 किसानों को कृषि फसलों की उत्पादकता बढ़ाने हेतु जागरूक किया गया। एक पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन कर 60 किसानों की 154 बकरियों के स्वास्थ्य का परीक्षण कर उत्पादन बढ़ाने हेतु किसानों को जागरूक किया गया। महिला मण्डल दल की छः बैठकों का आयोजन कर 67 महिलाओं को गृह वाटिका, मोमबत्ती, अगरबत्ती इत्यादि विषयों पर तकनीकी जानकारी दी गयी। किसानों द्वारा केन्द्र का 35 बार भ्रमण किया गया, जिसमें 314 किसानों ने प्रतिभाग किया। भ्रमण करने वाले किसानों को केन्द्र द्वारा संचालित प्रसार कार्यक्रमों में प्राप्त उपलब्धियों एवं उनकी कृषि सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया गया। 104 किसानों को मोबाईल फोन के माध्यम से उनकी कृषि सम्बन्धी समस्याओं के निदान हेतु जानकारी दी गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 04 रेडियो वार्ता देहरादून आकाशवाणी में समसामयिक विषय पर दी गयी। स्वयं

सहायता समूहों की छ: बैठक आयोजित कर 67 किसानों एवं कृषक महिलाओं को लाभान्वित किया गया।

- केन्द्र द्वारा आयोजित 02 प्रदर्शनी में प्रतिभाग करते हुए केन्द्र का स्टॉल लगाकर तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। जलागम प्रबन्ध निदेशालय द्वारा मई 02-04, 2018 को वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में कृषि क्षेत्र में हो रहे जलवायु परिवर्तन पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी में मई 02 एवं 03, 2018 को प्रतिभाग किया गया, जिसमें 90 किसानों ने स्टॉल का भ्रमण किया। केन्द्र के वैज्ञानिक डा. एस.एस. सिंह द्वारा इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में टमाटर की फसल में समेकित फसल प्रबन्धन विषय पर प्रस्तुतिकरण किया गया। मई 04, 2018 को परेड ग्राउण्ड, देहरादून में आयोजित राज्य स्तरीय संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी में केन्द्र द्वारा प्रतिभाग कर स्टॉल लगाया गया, जिसमें 155 किसानों एवं कृषक महिलाओं ने भ्रमण कर तकनीकी जानकारी प्राप्त की। केन्द्र द्वारा लगाये गये स्टॉल का मा. मुख्यमंत्री, मा. कृषि एवं उद्यान मंत्री, मा. कुलपति, पन्तनगर, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं निदेशक अनुसंधान द्वारा अवलोकन किया गया, जिसमें केन्द्र द्वारा संचालित प्रसार कार्यक्रमों के सम्बन्ध में विशिष्ट अतिथियों को अवगत कराया गया।



मेले का उद्घाटन करते हुए मा. मुख्यमंत्री

- लाखामण्डल, चकराता (देहरादून) में मई 20, 2018 को विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर देहरादून के पर्वतीय एवं जनजातीय क्षेत्रों में मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने हेतु एक संगोष्ठी एवं जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 504 मधुमक्खी पालकों एवं किसानों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में डा. एस.एन. तिवारी, निदेशक अनुसंधान, पन्तनगर; डा. एम.एस. खान, प्रोफेसर एवं परियोजना अधिकारी; डा. पूनम श्रीवास्तव, वैज्ञानिक; डा. आर.एम. श्रीवास्तव, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डा. एस.एस. सिंह, प्रोफेसर ने किसानों को मधुमक्खी पालन से सम्बन्धित विभिन्न व्यावहारिक विषयों पर किसानों को जागरूक किया। इसके अतिरिक्त लाखामण्डल में मई 21 एवं 22, 2018 को मधुमक्खी पालन विषय पर किसानों एवं मधुमक्खी पालकों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें क्रमशः 110 एवं 100 किसानों ने प्रतिभाग किया। इन कार्यक्रमों का आयोजन पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय में संचालित परियोजना समेकित मधुमक्खी पालन केन्द्र के अन्तर्गत किया गया।
- केन्द्र द्वारा समसामयिक विषयों पर किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु सात बार विभिन्न समाचार पत्र में तकनीकी जानकारी प्रकाशित की गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा तीन पापुलर आर्टिकल प्रकाशित किये गये। विभिन्न संगोष्ठी में प्रतिभाग करते हुए केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा तीन लेक्चर दिये गये, जिसमें 245 किसानों को लाभान्वित किया गया।
- मा. प्रधानमंत्री द्वारा देश के किसानों की आय दोगुना करने विषय पर जून 20,



विश्व मधुमक्खी दिवस के अवसर पर उपस्थित वैज्ञानिकगण

2018 को देश के विभिन्न राज्यों के किसानों से वार्ता की गई, जिसका लाईव प्रसारण दिखाया गया। मा. प्रधानमंत्री जी के इस कार्यक्रम को देहरादून जनपद के 107 प. गतिशील कृषकों को केन्द्र पर आमंत्रित कर प्रसारण को दिखाया गया। आमंत्रित किसानों को केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा खरीफ फसलों की उत्पादकता में वृद्धि करने हेतु प्रयोग किये जाने वाले तकनीकों से भी किसानों को जागरूक किया गया।



किसानों की आय दोगुना करने विषयक कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 30 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 1240 कृषकों एवं कृषक महिलाओं को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 84 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 35 प्रक्षेत्रों पर कृषि, मृदा, उद्यान एवं गृह विज्ञान विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- केन्द्र द्वारा मई 02, 2018 को ग्राम स्वराज अभियान के अन्तर्गत 'किसान दिवस' में प्रतिभाग किया गया। इस के साथ ही इस अवसर पर एक कृषि प्रदर्शनी तथा बायर-सेलर मीट का आयोजन भी किया गया। ऋषिकुल आयुर्वेदिक संस्थान के ऑडिटोरियम में आयोजित इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड सरकार के कृषि मंत्री श्री सुबोध उनियाल तथा सांसद हरिद्वार डा. रमेश पोखरियाल 'निशंक' मुख्य अतिथि थे। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा इस अवसर पर आयोजित गोष्ठी में समसामयिक कृषि सम्बन्धी जानकारी कृषकों को प्रदान की। कार्यक्रम में केन्द्र द्वारा स्थापित कृषक उत्पादक संघ 'जीवामृत' शेरपुर खेलमऊ को जिला मजिस्ट्रेट द्वारा प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया।
- केन्द्र द्वारा जून 01, 2018 से जुलाई 31, 2018 तक जनपद में कृषि कल्याण अभियान चलाया जा रहा है। नीति आयोग द्वारा पूरे देश में से 111 जनपदों का चुनाव इस अभियान हेतु किया गया है। इनमें हरिद्वार एक है। जनपद से 25 गांव भी नीति आयोग द्वारा इस अभियान हेतु चुने गये हैं। इन सभी गांवों में केन्द्र द्वारा मौन पालन, मशरूम उत्पादन, समेकित नाशीजीव प्रबन्धन तथा पोषक वाटिका पर प्रशिक्षण दिये गये। साथ ही रेखीय विभागों द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों को भी केन्द्र द्वारा कोऑर्डिनेट किया गया।
- केन्द्र द्वारा जून 10, 2018 को एक किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी को कृषि कल्याण अभियान के अन्तर्गत आतमा परियोजना द्वारा प्रायोजित किया गया। गोष्ठी में कृषकों की आय दोगुना करने हेतु तकनीकियों तथा मौन पालन, मशरूम उत्पादन, पोषक वाटिका एवं समेकित नाशीजीव प्रबन्धन पर



ग्राम स्वराज अभियान के अन्तर्गत किसान दिवस का आयोजन

चर्चा की गई। इस अवसर पर श्री तरसीम चांद, संयुक्त सचिव, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार भी उपस्थित रहे। गोष्ठी में केन्द्र के सभी वैज्ञानिकों के साथ-साथ मुख्य कृषि अधिकारी तथा मुख्य उद्यान अधिकारी भी उपस्थित रहे।

- केन्द्र द्वारा जून 20, 2018 को अपने सभागार में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कृषकों से सीधे संवाद का टीवी प्रसारण कृषकों हेतु दिखाया गया। इस अवसर पर जनपद के विभिन्न ग्रामों से आये कृषकों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में केन्द्र के सभी वैज्ञानिक भी उपस्थित रहे।

- केन्द्र पर किसानों की आय दोगुनी करने के लिए केन्द्र सरकार की ओर से संचालित कृषि कल्याण अभियान का आयोजन किया गया। इस मौके पर किसानों को मूंग की उन्नतशील किट भी बांटी गई। केन्द्र के प्रभारी डा. पुरुषोत्तम कुमार ने केन्द्र की ओर से चलाई जा रही गतिविधियों के बारे में बताया। कृषि विभाग के अपर निदेशक, गढ़वाल मण्डल, डा. परमानन्द ने किसानों को उत्पादों के मूल्य सर्वेक्षण, उत्पादन लागत में कमी और सही भण्डारण की जानकारी दी। नीति आयोग की ओर से चयनित टकाभरी गांव के 20 किसानों को हैरो, ट्रिलर, रेटावेटर, स्प्रे मशीन कृषि यंत्र वितरित किये गये।



कृषि कल्याण अभियान कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा कृषकों, ग्रामीण युवाओं एवं प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 31 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें 598 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 48 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 657 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गयी।
- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 17.05 है. क्षेत्रफल पर 90 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। केन्द्र के वैज्ञानिक समय-समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक तकनीकी जानकारी प्रदान करते हैं एवं कृषक की समस्याओं का समाधान भी मौके पर कर रहे हैं।
- विगत त्रैमास में विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों में कृषि कार्यों की 05 न्यूज प्रकाशित की जा चुकी हैं। विगत त्रैमास में विभिन्न फसलों पर 08 प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया, जिसमें 123 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। साथ ही साथ कृषकों को नई तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 05 किसान गोष्ठियों का आयोजन रेखीय विभागों द्वारा किया गया, जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिये गये, जिसमें 127 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- मई 09, 2018 को निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस डबास एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान, प्रसार शिक्षा निदेशालय, पन्तनगर द्वारा केन्द्र का भ्रमण किया गया। आप द्वारा विभिन्न सब्जी उत्पादन, फल बगीचा, कीवी इकाइयों का अवलोकन किया गया एवं इसको और प्रभावी बनाने हेतु सुझाव दिये।
- मई 17, 2018 को निदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-1, लुधियाना डा. राजबीर सिंह द्वारा केन्द्र

के प्रक्षेत्र एवं विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों का भ्रमण किया। आपने विशेषकर प्याज बीज उत्पादन, आड़ू बगीचे में प्याज, लहसुन, फ्रांसबीन इत्यादि की सह फसली



डा० राजबीर सिंह, निदेशक-अटारी द्वारा प्रक्षेत्र भ्रमण

खेती की सराहना करते हुए इससे कृषकों की आय दोगुनी करने में मील का पत्थर बताया। इस अवसर पर आयोजित कृषि गोष्ठी में उन्होंने उपस्थित कृषकों से केन्द्र द्वारा विकसित तकनीक का लाभ उठाने का आह्वाहन किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लोहाघाट (चम्पावत)

- आलू में झुलसा रोग प्रबन्धन विषय पर ग्राम दुगरी फर्त्याल में 18 कृषकों के 0.4 है. क्षेत्रफल में आन फार्म ट्रायल लगाया गया। इसके अतिरिक्त पालीहाउस टमाटर में सफेद मक्खी प्रकोप के प्रबन्धन हेतु ओली व कापडी गांव में 13 कृषकों के प्रक्षेत्रों पर आन फार्म ट्रायल लगाये गये।
- खरीफ 2018 में विभिन्न फसलों पर प्रजातीय प्रदर्शनों जैसे सोयाबीन (पी.एस. 1225) के 87 प्रदर्शन 3.1 है., गहत (बी.एल.जी. 19) के 36 प्रदर्शन 1.8 है., उर्द (पन्त उर्द 31) के 62 प्रदर्शन 2.0 है., अरहर (यू.पी.ए.एस. 120) के 20 प्रदर्शन 5.2 है., झंगोरा (वी.एल. मादिरा 207) के 32 प्रदर्शन 2.0 है., धान (पन्त धान 19) के 60 प्रदर्शन 3.0 है., धान (पन्त धान 11) के 40 प्रदर्शन 3.0 है. तथा संकर धान (सावा 227) के 32 प्रदर्शन 5.0 है. में जनपद चम्पावत के सभी चार विकास खण्डों के विभिन्न गाँवों - फागपुर, गुदमी, चल्थी, सुई-पऊ, खीडी, गोसनी, रौताकांगला, तल्ला बापरू, डुंगरी फर्त्याल आदि में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत लगाए गये। साथ ही एन.एफ.एस.एम. के अन्तर्गत (क्लस्टर एफ.एल. डी.) सोयाबीन (पी.एस. 1225) के 181 प्रदर्शन 5.0 है. में फागपुर चल्थी आदि ग्रामों में लगाए गये।
- इसके अतिरिक्त फसल सुरक्षा के अन्तर्गत चौलाई में पर्ण जालक कीट प्रबन्धन पर 84 कृषकों, शिमला मिर्च में सफेद मक्खी, माहू कीट व कजली रोग प्रबन्धन पर 30 कृषकों (0.5 है.) तथा अदरक में प्रकन्द सड़न रोग पर 20 कृषकों (1 है.) के प्रक्षेत्रों पर प्रथम पंक्ति प्रदर्शन लगाये गये। ये प्रदर्शन तल्ला बापरू, डुंगरी फर्त्याल, ओली गाँव में लगाये गये हैं।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा फसल उत्पादन, पशु पालन, फसल सुरक्षा, खाद्य प्रसंस्करण, मृदा परीक्षण व मत्स्य पालन में कृषकों व बेरोजगार युवाओं हेतु कुल 29 प्रशिक्षणों का आयोजन कर 585 कृषकों को लाभान्वित किया गया।
- अप्रैल 18, 2018 को बाएफ संस्था द्वारा पालीहाउस में उन्नत सब्जी उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 25 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- जून 12, 2018 को इन्टरनेशनल सेन्टर फार इन्टीग्रेटेड माउन्टेन डेवलपमेंट (ICIMOD-Nepal) से आये अधिकारियों व



हाईब्रीड धान का बुआई पूर्व प्रशिक्षण का आयोजन

कृषकों के 12 सदस्यीय दल ने केन्द्र पर विकसित तकनीकों की जानकारी प्राप्त करने हेतु केन्द्र का भ्रमण किया।

- विगत त्रैमास में माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तथा बाएफ संस्था द्वारा लाये गये कुल 09 छात्रों व कृषकों के समूहों ने केन्द्र का भ्रमण कर कृषि सम्बन्धी नवीनतम जानकारियाँ प्राप्त की।
- विगत त्रैमास में टमाटर, कद्दू व शिमला मिर्च की कुल 12475 पौध तैयार की गई। इन पौधों की बिक्री की गई एवं प्रदर्शन हेतु कृषकों को उपलब्ध कराया गया।

- केन्द्र प्रक्षेत्र पर 100 वर्ग मीटर पालीहाउस में टमाटर की राजा व मनीषा+ प्रजातियों पर प्रदर्शन लगाये गये। 100 वर्ग पालीहाउस से कुल 429 किग्रा.



पॉलीहाउस में टमाटर व खीरा उत्पादन

टमाटर का उत्पादन लिया गया, जिसमें राजा प्रजाति से 180 किग्रा. तथा मनीषा+ प्रजाति से 249 किग्रा. उपज प्राप्त हुई। मनीषा+ प्रजाति में टमाटर तना कैंसर रोग का प्रकोप पाया गया, जिसके नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सी क्लोराइड का छिड़काव प्रभावी पाया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्योलीकोट (नैनीताल)

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे- पर्वतीय क्षेत्रों में गृह वाटिका के प्रति महिलाओं में जागरूकता लाना, मोमबत्ती बनाना (ऑन डिमाण्ड), पशुपालन (कुक्कुट पालन), पादप सुरक्षा (कीट प्रबन्धन) आदि विषयों पर केन्द्र से बाहर कुल 06 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन केन्द्र के साथ-साथ जनपद के गेटिया पड़ाव, भटलानी, दोगड़ा एवं सरियाताल आदि ग्रामों में किया गया।



प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में पशुपालन, गृहविज्ञान, पादप सुरक्षा तथा उद्यान विज्ञान अन्य विषयों जैसे बैक्यार्ड कुक्कुट पालन, मोमबत्ती बनाना, चारा



प्रशिक्षण में प्रतिभाग करते हुए प्रशिक्षणार्थी

मक्का, चारा लोबिया, सब्जी मटर अर्किल में जैविक नियंत्रण (उकठा रोग) आदि विषयों में कुल 100 प्रदर्शन कार्यक्रमों का कुशल संचालन किया गया। प्रदर्शनों का आयोजन लगभग 6.15 है. क्षेत्रफल में दोगड़ा, चोपड़ा, गेटिया, स्यालीखेत, भटलानी, धनपुर, आदि स्थानों पर सफलतापूर्वक किया गया। साथ ही वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न विषयों जैसे: महिलाओं के समय एवं श्रम को कम करने हेतु उन्नत दरांती, बैक्यार्ड पोल्ट्री विषय पर प्रक्षेत्र परीक्षण करवाए गये।

- विगत त्रैमास में कृषि विभाग एवं उद्यान विभाग, नैनीताल द्वारा मई 02, 2018; जून 06, 2018; जून 13, 2018 एवं जून 29, 2018 में 06 कृषक गोष्ठियों का आयोजन क्रमशः सूर्या गांव, भीमताल, दोगड़ा, जग्गी बंगर हल्दूचौड़ एवं कुंवरपुर में किया गया। इन गोष्ठियों में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग करके 338 कृषकों को विभिन्न कृषि सम्बन्धी जैसे: पशुपालन एवं आहार प्रबन्धन, चारा प्रबन्धन, स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को रोजगार परक जानकारी जैसे: मोमबत्ती निर्माण, बांधनी कला द्वारा वस्त्रों की रंगाई, फसलों में कीट एवं रोग से सम्बन्धित जानकारी दी गई।

- जून 12-13, 2018 तक केन्द्र की गृह वैज्ञानिक द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत मोमबत्ती निर्माण एवं स्थानीय फलों एवं सब्जियों का मूल्य संवर्धन विषय पर



मोमबत्ती निर्माण पर प्रशिक्षण देते हुए वैज्ञानिक

ग्वालदम स्थित सशत्रु सीमा बल के तत्वाधान में सैनिक परिवारों की 35 महिलाओं को प्रयोगात्मक रूप से प्रशिक्षित किया गया।

- जून 13, 2018 को केन्द्र में लालकुआं दुग्ध संघ सहकारी समिति द्वारा "गाय गंगा महिला डेयरी" विषय पर एक दिवसीय कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 50 महिलाओं एवं पुरुषों द्वारा प्रतिभाग किया गया।



गाय गंगा महिला डेयरी पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम के कार्यों का अनुश्रवण

डा. वार्ड.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान द्वारा मई 08-09, 2018 में कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली) का भ्रमण किया। इस अवधि में केन्द्र द्वारा प्रक्षेत्र पर संचालित किये जा रहे विभिन्न गतिविधियों का अनुश्रवण किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा द्वारा केन्द्र के प्रभारी अधिकारी एवं वैज्ञानिकों को केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति की बैठक में कुलपति जी द्वारा दिये गये निर्देशानुसार प्रक्षेत्र पर इन्टीग्रेटेड फार्मिंग सिस्टम, सब्जी व फल पौध संवर्धन हेतु पॉली हाउस का निर्माण, पौल्ट्री व पशुपालन तथा एग्रोफोरेस्ट्री प्रदर्शन इकाई की स्थापना यथाशीघ्र करने हेतु निर्देशित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर द्वारा आयोजित प्रक्षेत्र दिवस में प्रतिभाग

डा. वाई.पी.एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) द्वारा ग्राम-सुन्दरपुर, विकास खण्ड-सितारगंज में मक्का की खेती पर दिनांक 12 जून, 2018 में आयोजित प्रक्षेत्र दिवस में प्रतिभाग किया गया। इस कार्यक्रम में उपरोक्त वैज्ञानिकों के अलावा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक, रिद्धि सिद्धि प्राईवेट लिमिटेड के अधिकारी एवं क्षेत्र के 26 प्रगतिशील कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी-उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, बी.टी.एम., रेशम पालक, निरीक्षक/कर्मचारी एवं प्रसार कर्मियों हेतु 'समन्वित जलागम प्रबन्धन' विषयक 01 प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा कुल 22 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृदा एवं जल संरक्षण अभियांत्रिकी) एवं डा. बी.वी. सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं-सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 09 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन प्रबन्धन, मशरूम उत्पादन, कृषि की औद्योगिक तकनीक एवं जैविक खेती, कृषि वानिकी एवं रोजगारपरक कुक्कुट पालन से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 354 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण दो दिवसीय से लेकर पांच दिवसीय तक थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाइन (05944-234810, 05944-235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800-180-1551 टोल फ्री) के माध्यम से किसानों द्वारा कुल 460 प्रश्न पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 482 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रु. 51,683 के साहित्य एवं रु. 1,81,836 के विभिन्न सब्जियों, धान, सोयाबीन, अरहर, उर्द आदि के बीजों का क्रय किया गया। एटिक की गतिविधियों का संचालन डा. राम जी मौर्य, प्राध्यापक (सस्य)/प्रभारी अधिकारी एटिक के मार्गदर्शन में किया गया।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

मैदानी क्षेत्रों में कृषि हेतु

माह जुलाई:

- धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए ब्यूटाक्लोर 50 ई.सी. 3.0 लीटर या एनीलोफास 30 ई.सी. 1.65 लीटर मात्रा प्रति है। की दर से रोपाई के 3-4 दिन के अन्दर प्रयोग करें। अधिक उपजवाली किस्मों में नाइट्रोजन 180, फास्फोरस 60, पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है। तथा सुगन्धित धान (बीनौ) किस्मों में नाइट्रोजन 80-120, फास्फोरस 60 तथा पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है। की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें।

- मूंगफली की बुवाई जुलाई मध्य तक कर लें। गुच्छेदार प्रजातियों के लिए प्रति है. 80-100 कि.ग्रा. तथा फैलने वाली प्रजातियों के लिए 60-80 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करें। फैलने वाली प्रजातियों में 45 सेमी. तथा गुच्छेदार प्रजातियों में 30 सेमी. पंक्ति से पंक्ति की दूरी तथा 15-20 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखें।
- गन्ना में जलभराव वाले खेतों से जल निकास की व्यवस्था करें। जुलाई के प्रथम सप्ताह में जड़ों पर हल्की एवं अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त मिट्टी चढ़ाये। फसल की बढ़वार अच्छी होने पर 5 फीट की ऊंचाई पर बंधाई करें। अगोला बेधक कीट की रोकथाम के लिए कार्बोपथूरान 3 जी. का 33 कि.ग्रा. प्रति है. को नमी की दशा में प्रयोग करें। पाइरिल्ला या सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर 1.25 लीटर क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. की दवा को 600-800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. छिड़काव करें।
- बैंगन की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए जुलाई के प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह में 60x60 सेमी. की दूरी पर सायंकाल के समय रोपाई करें।
- फूलगोभी की अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत में 50x30 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। नर्सरी में वीनियर कलम बांधने का कार्य प्रारम्भ करें।
- नीबूवर्गीय फल वृक्षां में कैंकर की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स-50 का छिड़काव करें। बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- अमरुद के फलदार बाग में नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग करें।
- पपीता में जल निकास का प्रबन्ध करें। तना विगलन की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स-50 घोल से छिड़काव करें।
- लीची के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य करें। नये पौधों तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य इस माह समाप्त कर लें।
- आंवला के बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। प्ररोह गांठ व रस्ट रोग की रोकथाम हेतु नुवाक्रान व इण्डोफिल एम 45 का छिड़काव करें।
- नाशपाती में बीजू पौधों पर कलम बांधें। कज्जली रोग की रोकथाम हेतु पेड़ों पर जीनेब का छिड़काव करें।
- आड़ू एवं आलूबुखारा में भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्त:

- धान की फसल में नाइट्रोजन की पहली 1/4 भाग मात्रा कल्ले फूटते समय एवं दूसरी 1/4 भाग मात्रा बालियों में गोभ के निकलने से पहले यूरिया के रूप में ट्रापड्रेसिंग के रूप में डालें। खैरा रोग के नियंत्रण के लिए 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 कि.ग्रा. यूरिया को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। जीवाणु झुलसा के लक्षण दिखाई देते ही 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन व 500 ग्राम कॉपर-आक्सीक्लोराइड को आवश्यक पानी की मात्रा में घोलकर प्रति है. छिड़काव करें। प्रारम्भिक अवस्था में यदि खेत में औसतन 8-10 प्रतिशत मृत गोभ तना छेदक के तथा 10-15 भूरा फुदका की संख्या प्रति पौधा दिखाई दे तो कीटनाशी का प्रयोग करें।
- उर्द एवं मूंग की शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई करें। इसके लिए मूंग की पंत मूंग 2, पी.डी.एम. 54, नरेन्द्र मूंग 1, पंत मूंग 4 व 5 एवं उड़द के लिए पंत उर्द 19, 35 व 40 व नरेन्द्र उर्द 1 बो सकते हैं।
- अरहर में पत्ती लपेटक कीट का प्रकोप होने पर क्वीनालफास 25 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा को 600-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में खरपतवार नियंत्रण के लिए एक निराई करें। यदि खेत में दीमक का प्रकोप हो तो 4 लीटर प्रति है. की दर से क्लोरपाइरीफास का प्रयोग करें। टिकका रोग नियंत्रण के लिए खड़ी फसल पर 210 मिली ग्राम मैकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. 800-1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति है. छिड़काव करें।
- टमाटर, बैंगन व मिर्च में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई, सिंचाई व जल निकास की व्यवस्था करें। टमाटर में झुलसा नामक बीमारी के नियंत्रण हेतु 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 का छिड़काव करें। बैंगन में फल तथा तना छेदक नामक कीट के बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें। मिर्च में कीटों तथा बीमारियों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत

इण्डोफिल एम-45 व 0.15 प्रतिशत मैटासिस्टॉक्स का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।

- फूलगोभी की मध्यकालीन फसल की 45x45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के पौधशाला में मूलवृंत तैयार करने के लिए गुठलियों की बुवाई करें। नये पौधे तैयार करने के लिए 1 वर्ष पुराना मूलवृंत पर वीनियर कलम बांधने का कार्य करें। शाखा गांठ कीट की रोकथाम के लिए रोगोर (0.2 प्रतिशत) घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

माह सितम्बर:

- अरहर में पत्ती लपेटक एवं फलीबेधक कीट के रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफॉस 36 एस.एल. की 2.0 मि.ली. दवा का एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में फूल बनने एवं खूंटियों के भूमि में प्रवेश तथा फलियों के विकास के समय भूमि में पर्याप्त नमी आवश्यक है। नमी के अभाव में सिंचाई का प्रबन्ध करें।
- वर्षा न होने पर गन्ना की फसल में सिंचाई करें। गन्ना की दूसरी बंधाई आवश्यकतानुसार करें। कण्डुवा व लालसड़न ग्रसित पौध दिखाई देने पर सावधानीपूर्वक उखाड़कर नष्ट कर दें। गुरदासपुर बेधक की रोकथाम के लिए गन्ने के ऊपर का सूखा भाग काटकर नष्ट कर दें।
- तोरिया की बुवाई माह के द्वितीय पखवाड़े में करें। बुवाई हेतु पी.टी. 30, 303, 507, संगम, भवानी, उत्तरा आदि किस्में उपयुक्त हैं। बीज दर 3-4 कि.ग्रा. प्रति है., 30 सेमी. की लाईन में 3-4 सेमी. गहरी बुवाई करें। बीज को 2.5 ग्राम थाइराम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें। उर्वरकों में फास्फोरस के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग लाभदायक होता है क्योंकि इससे फसल को सल्फर (12 प्रतिशत) की उपलब्धि हो जाती है।
- अच्छी पैदावार व आमदनी प्राप्त करने के लिए इस माह 50x50 सेमी. की दूरी पर टमाटर की रोपाई करें।
- अगेती आलू की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में की जा सकती है। इसके लिए कुफरी चन्द्रमुखी व कुफरी अशोका उन्नत किस्में हैं।
- नीबू वर्गीय फलों को गिरने से रोकने के लिए 2, 4-डी या नैथलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।
- बेर में चूर्णित आसिता की रोकथाम हेतु कैराथेन का छिड़काव करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि हेतु-

माह जुलाई:

- टमाटर/मिर्च, अदरक, हल्दी में बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।
- सेब/नाशपाती के बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुवाई करें। कज्जली धब्बा रोग की रोकथाम हेतु जिनेब अथवा ब्लाइटाक्स 50 का छिड़काव करें।
- आड़ू, आलूबुखारा व खुबानी में भूरा विगलन की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्त:

- सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व पर्याप्त नमी की दशा में 2.0 कि.ग्रा. यूरिया प्रति नाली प्रयोग करें। तना छेदक कीट के नियंत्रण के लिए क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. या क्यूनालफास 25 ई.सी. की क्रमशः 30 मि.ली. व 40 मि.ली. प्रति नाली की दर से 16-20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई करें। कमला कीट, क्यूलिआप्स एवं गर्डिल विटिल कीट नियंत्रण के लिए डायमैथोएट 30 ई.सी. 20 मि.ली. दवा का 16-20 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति नाली छिड़काव करें।
- आलू, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, अदरक, हल्दी में झुलसा नामक बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी, लोबिया में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। नई फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति है. की दर से खड़ी फसल में डालें।
- खीरा वर्गीय फसलों में 10-15 ग्राम यूरिया प्रति थाले की दर से डालें।
- नीबू वर्गीय फल, सेब, नाशपाती, आलूबुखारा एवं खुबानी में फल विगलन की रोकथाम के लिए ब्लाइटॉक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

माह सितम्बर:

- असिंचित क्षेत्रों में धान एवं मंडुवा में झोंका रोग नियंत्रण के लिए लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम या एडिफन्फास की 14-20 ग्राम मात्रा को 15-20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। 10 दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव करें। धान में खैरा रोग नियंत्रण हेतु 100 ग्राम जिंक सल्फेट को 400 ग्राम यूरिया अथवा 50 ग्राम बुझे हुए चूने के 20 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति नाली छिड़काव करें। पत्ती लपेटक कीट के लिए मोनोक्रोटोफॉस 36 एस. एल. की 30 मि.ली. का 14-15 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति नाली छिड़काव करें।
- टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च में झुलसा बीमारी/फलों पर धब्बे दिखाई देने पर इण्डोफिल एम 45 नामक दवा का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैंगन के फल छेदक तथा तना छेदक कीट एवं खीरा वर्गीय फसलों में कीट से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सेब की नर्सरी के बीजू पौधों पर टी-चश्मा चढ़ाएं। सेब/नाशपाती में रूइया कीट की रोकथाम हेतु मैटासिस्टॉक्स का छिड़काव करें। दग्ध अंगमारी की रोकथाम हेतु बोर्डो मिश्रण (4:4:50) का छिड़काव करें।
- आड़ू एवं आलूबुखारा फल पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पेड़ों पर बोरेक्स का छिड़काव करें।

पशुपालन/मत्स्य पालन एवं अन्य

माह जुलाई:

- वाह्य परजीवी नाशक का बाड़े में छिड़काव करें। पतले गोबर की बीमारी से बचाव हेतु सूखे चारे की पर्याप्त मात्रा 30 प्रतिशत से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दें।
- कुक्कुटों के बिछावन को सूखा रखने के लिए इसकी नियमित गुड़ाई करें। इसके लिए बुझा हुआ चूना 1.25 कि.ग्रा. प्रति वर्ग मी. की दर से मिलायें। चूजों में काक्सीडियोसिस रोग की रोकथाम के लिए उचित उपाय करें।
- तालाब के पानी में प्राकृतिक भोजन (प्लवकों) का निरीक्षण करें। मत्स्य बीज संचय के पूर्व पानी की जाँच करें एवं पी.एच. 7.5 से 8.0 व घुलित आक्सीजन 3-7 मि.ग्रा. प्रति लीटर रखें। 10-20 कु. प्रति है. प्रति माह कच्चे गोबर का प्रयोग करें।

माह अगस्त:

- पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलायें।
- तालाब में 25-50 मि.मी. आकार के 10000/है. मत्स्य बीज का संचय करें। गोबर की खाद के प्रयोग से 15 दिनों के बाद एन.पी.के. खादों (यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट व पोटाश) का प्रयोग करें। एन.पी.के. खादों के प्रयोग के 15 दिनों के पश्चात् 10-20 कु./है. गोबर की खाद का प्रयोग करें।

माह सितम्बर:

- यदि पशु मिट्टी खा रहा है तो उसे संतुलित आहार के साथ-साथ 40 से 50 ग्राम खनिज मिश्रण दें, साथ ही चिकित्सक के परामर्श के अनुसार अन्तःकृमिनाशक दवा पिलायें। यकृत कृमि, निमोनिया एवं दस्त से बचाव हेतु चिकित्सक की सलाह लें।
- तालाब के पानी में प्लवकों का निरीक्षण करें व संतोषप्रद मात्रा को कायम रखें। मछलियों के भार का 2-3 प्रतिशत की दर से परिपूरक आहार दें।

निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास द्वारा

विभिन्न वाह्य आयोजनों/बैठकों में प्रतिभाग

- अप्रैल 23-24, 2018 तक संघ लोक सेवा आयोग, दिल्ली में गोपनीय कार्य हेतु आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।
- मई 03, 2018 को देहरादून में 'पहाड़ी कृषि जलवायु' पर आयोजित शिखर सम्मेलन में पैनेलिस्ट के रूप में प्रतिभाग किया गया।
- मई 08-09, 2018 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, ग्वालदम (चमोली) के कार्यों का निरीक्षण किया गया।
- जून 12, 2018 को कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर) द्वारा नानकमत्ता में प्रक्षेत्र दिवस के आयोजन में प्रतिभाग किया गया।

104वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा 104वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन पन्तनगर में अक्टूबर 05-08,

2018 तक किया जा रहा है, जिसमें कृषि निवेश से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फर्मे, स्वयंसेवी संस्थाएं, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की फर्मे एवं कृषि से सम्बन्धित शैक्षणिक / शोध संस्थान आदि अपने स्टॉल सहित सादर आमंत्रित हैं। किसान मेले में आयोजित किये जाने वाले प्रमुख कार्यक्रमों के विवरण निम्नवत हैं :-



प्रमुख आकर्षण

- * अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदर्शनों का अवलोकन
- * कृषि सूचना केन्द्र का अवलोकन
- * आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन
- * उन्नतशील बीज एवं पौधों की बिक्री
- * कृषि उद्योग प्रदर्शनी
- * विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री

विशेष कार्यक्रम एवं प्रतियोगितायें

- | | |
|---|---------------|
| * फल-फूल, शाक-भाँजी एवं परिरक्षित पदार्थों की प्रदर्शनी व प्रतियोगिता | 05-06 अक्टूबर |
| * संकर बछियों की नीलामी (अपराह 2.00 बजे) शैक्षणिक डेरी फार्म, नगला | 06 अक्टूबर |
| * पशु प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता (पूर्वाह्न 10.00 बजे) पशु उत्पाद एवं प्रबन्धन विभाग | 07 अक्टूबर |
| * विशेष व्याख्यानमाला (अपराह 2.30 से 3.30 बजे) गाँधी हॉल | 05-07 अक्टूबर |
| * किसान गोष्ठी (अपराह 3.30 से 6.30 बजे) गाँधी हॉल | 05-07 अक्टूबर |
| * सांस्कृतिक कार्यक्रम (सांय 7 से 8.30 बजे) गाँधी हॉल | 05-07 अक्टूबर |
| * समापन एवं पुरस्कार वितरण (अपराह 3.00 बजे) गाँधी हॉल | 08 अक्टूबर |

मेले में स्टॉल लगाने एवं अन्य सम्बन्धित विशेष जानकारी निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं मेला समन्वयक, डा. एस.के. बंसल, प्राध्यापक के दूरभाष संख्या 05944-234812 (कार्या.), 233967 (आवास) एवं मो. 07500241450 से प्राप्त की जा सकती है।

निदेशक की कलम से



विश्व की बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगिकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का आकार निरन्तर घटता जा रहा है। अतः भोजन आपूर्ति हेतु खाद्य उत्पादों के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए खेतों में कीटनाशी, फफूँदनाशी, खरपतवारनाशी, चूहेमार दवाएं व रासायनिक उर्वरकों आदि का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। चूंकि ये रसायन जहरीले होते हैं तथा जिस प्रकार ये फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले जीवों के लिए घातक हैं उसी प्रकार असावधानीपूर्वक खेतों में किए गए इनके

प्रयोग से खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव मानव, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों पर पड़ता है व प्रकृति में जैविक व अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान का चक्र (इकोलॉजिकल सिस्टम) भी प्रभावित होता है। यह परिवर्तन वातावरण व मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इन सभी समस्याओं से निपटने हेतु हमें ऐसे विकल्प खोजने होंगे, जिनके दूरगामी प्रभाव मानव व सभी जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक न हो व वातावरण के लिए सुरक्षित हो। इस दिशा में 'जैविक खेती' एक महत्वपूर्ण विकल्प है। 'जैविक खेती उत्पादन' एक स्थाई, विश्वसनीय, प्रदूषण रहित, स्वास्थ्य हेतु लाभकारी एवं रसायन अवशेष रहित खाद्य उत्पादन की एक लाभकारी तकनीक है। इसके द्वारा गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन के लिए स्थानीय जलवायु के अनुकूल विकसित उत्पादन तकनीकों, जैविक खाद, जैविक कीटनाशक उत्पादन तकनीकों व जैव नियंत्रण की विभिन्न विधियों आदि के सफल प्रबन्धन की जानकारी आवश्यक है। जैविक खेती हेतु रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाइयों के प्रयोग को बढ़ावा देकर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीकों की जानकारी कृषकों तक पहुंचाना जरूरी है। इससे जल, मृदा व वातावरण शुद्ध रहेगा व प्रत्येक मनुष्य एवं जीवधारी भी स्वस्थ रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 'जैविक खेती' को अपनाने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। 'जैविक खेती' के लाभों से लोगो को अवगत कराने हेतु कृषि विभाग द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर 'जैविक कृषि मेले व फूड फेस्टिवल' का भी आयोजन किया जाता है। इसमें प्रदेशभर के किसान कृषि की आधुनिक तकनीकों से जैविक खेती की विधि के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं व स्थानीय, देशी व विदेशी पर्यटकों द्वारा जैविक उत्पादों की अच्छी खरीद से जैविक खेती करने वाले किसानों को अपनी फसल का उत्तम लाभ मिलता है।

भारत में 60 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ऐसा है जहाँ जलवायु की अनुकूलता के कारण जहरीले कीटनाशकों व रासायनिक खादों की बहुत ही कम मात्रा या इनके बिना भी खेती की जा सकती है, जिसमें उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपदों का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार भारत के अन्य राज्यों की भांति उत्तराखण्ड में भी 'जैविक खेती' को आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से बढ़ाने का व्यापक प्रचार व प्रयास निःसन्देह ही कृषि जगत में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकता है, जिससे कि ग्रामीणों व स्थानीय लोगों को उत्तम रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के साथ पहाड़ों से तेजी से हो रहे पलायन को भी रोका जा सकता है। कृषि बागवानी विशेषज्ञों के अनुसार 'जैविक खेती' से प्रथम दो-तीन साल तक फसल उत्पादन पर असर पड़ता है, लेकिन उसके बाद उचित वैज्ञानिक तरीकों से उपयोग की गई 'जैविक खादों, दवाइयों के प्रयोग से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वह 'जैविक खेती' की आधुनिक तकनीकों व अनुसंधानों के व्यापक प्रचार-प्रसार द्वारा सुरक्षित पर्यावरण व उत्तम मानव स्वास्थ्य के साथ प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

Vanceo

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :- डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

पन्तनगर-263 145, रुधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), 05944-233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944-234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800-180-1551

दृश्य यात्रा



कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ